

काली माता जी की आरती



दुर्गाबाड़ी
Durgabari

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली ।
तेरे ही गुण गाये भारती, ओ मैया हम सब उतरें, तेरी आरती ॥

तेरे भक्त जनो पे माता, भीर पड़ी है भारी ।
दानब दल पर टूट पड़ो, माँ करके सिंह सवारी ।
सौ-सौ सिंहो से बलशाली, दस भुजाओ वाली,
दुखियो के दुखडे निवारती, ओ मैया हम सब उतरें, तेरी आरती ॥

माँ बेटे का है इस जग मे, बडा ही निर्मल नाता ।
पूत - कपूत सुने है पर न, माता सुनी कुमाता ॥
सब पे करुणा दरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियो के दुखडे निवारती, ओ मैया हम सब उतरें, तेरी आरती ॥

नही मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना माँ ।
हम तो मांगे माँ तेरे मन मे, इक छोटा सा कोना ॥
सबकी बिगडी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियो के सत को सवांरती ओ मैया हम सब उतरें, तेरी आरती ॥